# विज्ञान-प्रौद्योगिकी की रोशनी में चमका देहरादून, “हम विज्ञान से ही विश्व में शीर्ष पर"

# दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

वर्ष 15 | अंक 26 | मूल्य 15 रुपये | 16-22 नवम्बर, 2025


# बिहार में एनडीए की डबल सेंचुरी

वर्ष 15 | अंक 26

दिव्य हिमगिरि

16-22 नवम्बर, 2025

**संपादक**
कुँवर राज अस्थाना

**वरिष्ठ संवाददाता**
शंभूनाथ गौतम

**संवाददाता**
पूनम आर्या

**विज्ञापन**
सुनील सेमवाल

**ग्राफिक डिजायनर**
देव भट्ट

**संवाददाता**
**हरिद्वार:** डॉ. रजनीश गौतम
**पौडी:** रत्नमणि भट्ट
**कोटद्वार:** के.पी. बौंठियाल
**रूद्रपुर:** हेमचन्द्र बुडलाकोटी
**चमोली:** मुकेश रावत
**रुड़की:** श्रीगोपाल नारसन
**नैनीताल:** शीतल तिवारी
**अल्मोड़ा:** संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
**विकासनगर:** अजय शर्मा
**प्रसार:** रमेश सिंह रावत

**संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)**
**मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164**
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून से मुद्रित तथा 39/7 ई, ई. सी. रोड, (निकट मार्शल स्कूल सीनियर विंग) देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित।
संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*
*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

# कल्याण सिर्फ कागजी, हकीकत में मौतें

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि एक ओर कई प्रमुख फसलों की पैदावार में उम्मीद से ज्यादा की बढ़ोतरी के दावे किए जा रहे हैं, देश भर में बड़ी संख्या में लोगों को मुफ्त अनाज मुहैया कराया जा रहा है, वहीं महाराष्ट्र के एक हिस्से से कुपोषण की वजह से गरीब बच्चों की मौत की खबर आती है। राज्य के आदिवासी क्षेत्र मेलघाट में इस वर्ष जून से लेकर अब तक, यानी पिछले छह महीने में पैंसठ शिशुओं की मौत हो गई, लेकिन राज्य सरकार के संबंधित विभागों ने उन परिवारों की सुध तक नहीं ली। अब बंबई उच्च न्यायालय ने बुधवार को कई याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए राज्य सरकार को इस मसले पर कड़ी फटकार लगाई है। गौरतलब है कि मेलघाट आदिवासी बहुल इलाका है और यह कई वर्षों से कुपोषण की समस्या से ग्रस्त है। इस मामले में राज्य सरकार की दलीलें और प्रस्तुत किए गए कागजात इतने कमजोर हैं कि कोई इन पर भरोसा नहीं कर सकता। स्वाभाविक ही अदालत भी इससे असंतुष्ट रही और उसे कहना पड़ा कि कागज पर तो सब ठीक दिखता है, लेकिन वास्तविकता कोसों दूर है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि जब राज्य सरकार कल्याणकारी योजनाएं चला रही है, संभवत: केंद्र सरकार की मुफ्त अनाज की योजना भी वहां चल रही होगी, तो ऐसे में संबंधित आदिवासी बहुल क्षेत्र में कुपोषण कैसे अपने पांव फैला रहा था। अगर इस क्षेत्र में शिशुओं की मौत हो रही थी, तो इसके कारणों को जानने और उन्हें समय पर दूर करने की कवायद क्यों नहीं हुई। इसमें कोई दोराय नहीं कि आदिवासी इलाकों में कुपोषण के साथ चिकित्सा का अभाव एक गंभीर समस्या है। खासतौर पर मेलाघाट क्षेत्र में गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताएं आहार और उपचार के घोर अभाव का सामना कर रही हैं। अगर शिशुओं की माताओं को पोषक आहार के साथ चिकित्सा सहायता देने की पहल की गई होती, तो ज्यादातर शिशुओं को बचाया जा सकता था। मगर यह समझना मुश्किल है कि महानगरों की जरूरतों के लिए संसाधनों में कोई कमी न होना सुनिश्चित करने वाली सरकार गरीब तबकों या आदिवासी परिवारों के बच्चों को पोषणयुक्त भोजन मुहैया करा पाने में कोई रुचि क्यों नहीं लेती। मेलघाट में कुपोषण से बच्चों की मौत का आंकड़ा बेहद चिंताजनक है। यह सिर्फ एक आंकड़ा नहीं, बल्कि कई मासूम जिंदगियों का अंत है। सरकार के दावों और ज़मीनी हकीकत के बीच का अंतर साफ दिखाई दे रहा है। कोर्ट की फटकार इस बात का संकेत है कि अब इस मामले में तुरंत कार्रवाई की ज़रूरत है। प्रमुख सचिवों को कोर्ट में पेश होकर बताना होगा कि वे इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए क्या कदम उठा रहे हैं। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि सरकार इस बार क्या ठोस कदम उठाती है और क्या मेलघाट के बच्चों को कुपोषण के इस भयानक चक्र से मुक्ति मिल पाती है।

**कुँवर राज अस्थाना**

# बिहार में एनडीए की डबल सेंचुरी

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

**बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों ने पूरे राजनीतिक समीकरण बदल दिए हैं। एनडीए ने न केवल सत्ता की वापसी की, बल्कि रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन करते हुए डबल सेंचुरी के आंकड़े को पार कर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और एनडीए सरकार की नीतियों पर जनता ने गहरा विश्वास जताते हुए गठबंधन को डबल सेंचुरी के पार पहुंचा दिया। भाजपा ने उम्मीद से कहीं ज्यादा सीटें जीतकर बिहार की नंबर वन पार्टी का दर्जा हासिल कर लिया, जबकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अनुभव और उनकी विकास नीति ने एनडीए के वोट बैंक को और मजबूत किया। बिहार में एनडीए की यह जीत 2010 के बाद की सबसे बड़ी सफलता मानी जा रही है। बिहार की जनता ने इस बार सिर्फ वोट नहीं डाले, बल्कि एक नया राजनीतिक इतिहास रच दिया। गांव हो या शहर, पहली बार वोट डालने वाले युवा हों या बिहार की राजनीति को दशकों से देखते आए बुजुर्ग सबने मिलकर ऐसा जनादेश दिया जिसने पूरे देश को हैरानी में डाल दिया है। दूसरी ओर, महागठबंधन के लिए यह चुनाव करारी शिकस्त लेकर आया, जिसमें आरजेडी, कांग्रेस का प्रदर्शन सबसे निराशाजनक रहा। जनता के जनादेश ने साफ कर दिया कि बिहार बदलाव, स्थिरता और बुलंद नेतृत्व के साथ आगे बढ़ना चाहता है।**

बिहार की जनता ने इस बार इतिहास लिख दिया। चुनावी शोर, वादे, आरोप-प्रत्यारोप और बदलते समीकरणों के बीच जनता ने जिस ताकत से अपना निर्णय सुनाया है, उसने पूरे देश का ध्यान बिहार की ओर खींच लिया है। यह सिर्फ एक चुनावी नतीजा नहीं, बल्कि जनविश्वास का वह मजबूत संदेश है जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अनुभव, और एनडीए की संयुक्त रणनीति को जनता ने खुलकर स्वीकार किया है। चौंकाने वाले और पूरी तरह अप्रत्याशित नतीजों में एनडीए ने चुनाव में डबल सेंचुरी लगाते हुए 202 सीटों का विशाल आंकड़ा छू लिया, जिसने राजनीतिक माहौल को पूरी तरह बदल दिया। बिहार में एनडीए की यह जीत 2010 के बाद की सबसे बड़ी सफलता मानी जा रही है। बिहार की जनता ने इस बार सिर्फ वोट नहीं डाले, बल्कि एक नया राजनीतिक इतिहास रच दिया। गांव हो या शहर, पहली बार वोट डालने वाले युवा हों या बिहार की राजनीति को दशकों से देखते आए बुजुर्ग सबने मिलकर ऐसा जनादेश दिया जिसने पूरे देश को हैरानी में डाल दिया है। चुनावी शोर, उग्र सभाएं, बड़े-बड़े वादे, तीखे आरोप-प्रत्यारोप और तेजी से बदलते राजनीतिक गठजोड़ों के बीच जनता ने जिस अद्भुत स्पष्टता और दृढ़ता के साथ अपना निर्णय सुनाया

है, उसने बिहार को राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में ला खड़ा किया। यह नतीजा सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि विश्वास, नेतृत्व और विकास की राजनीति की जीत है। जनता ने यह साफ संदेश दे दिया कि वह अब भ्रम से नहीं, स्पष्ट सोच और स्थिरता से संचालित होती है। इस जनादेश की धड़कनों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्यापक लोकप्रियता, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अनुभव और सुशासन मॉडल तथा एनडीए की रणनीतिक एकजुटता का प्रभाव स्पष्ट महसूस किया जा सकता है। एनडीए का यह प्रदर्शन 2010 के स्वर्णिम दौर को पार करता हुआ, बिहार की आधुनिक राजनीति की सबसे बड़ी जीतों में शामिल हो गया है। भाजपा का दमदार प्रदर्शन, जदयू की शानदार वापसी और छोटे सहयोगियों को मिले महत्वपूर्ण समर्थन ने मिलकर इस जीत को सिर्फ बड़ी नहीं, बल्कि अत्यंत निर्णायक बना दिया है। बिहार के जनादेश ने बता दिया कि जनता ने किसी एक चेहरे को नहीं, बल्कि मोदी-नीतीश की जोड़ी और एनडीए के संयुक्त नेतृत्व को पूरी मजबूती के साथ स्वीकार किया है। वहीं महागठबंधन की यह हार कई कारणों से हुई है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस, जो गठबंधन के प्रमुख घटक दल थे, इस बार मतदाताओं का विश्वास जीतने में पूरी तरह से नाकाम रहे। तेजस्वी यादव के नेतृत्व में राजद ने कई लोकल और विकास के मुद्दों पर प्रचार किया, लेकिन राज्य में भ्रष्टाचार के आरोप और पार्टी की पिछले कार्यकाल की नकारात्मक छवि ने उनका मार्ग कठिन बना दिया। तेजस्वी यादव और उनके गठबंधन के साथी कांग्रेस, बिहार के ग्रामीण इलाकों में अपना प्रभाव नहीं जमा पाए और बीजेपी की स्टार प्रचारक छवि और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व के सामने उनका अभियान कमजोर पड़ गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीजेपी की चुनावी जीत के बाद कहा, यह बिहार के लोगों का आशीर्वाद है और एक बड़ा संदेश है कि जब हम सब मिलकर काम करते हैं तो कोई भी शक्ति हमें रोक नहीं सकती। इस बार बिहार ने अपने वोट से एक नया रास्ता चुना है। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि उनकी सरकार बिहार में समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है और आने वाले समय में बिहार को और अधिक केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ मिलेगा। बीजेपी और जेडीयू के गठबंधन के नेतृत्व में बिहार में भविष्य में बड़े बदलाव की संभावना है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य में एक मजबूत और स्थिर सरकार का गठन होने जा रहा है, जो विकास, रोजगार, और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए काम करेगी। वहीं, बीजेपी की केंद्र सरकार से भी बिहार को कई योजनाओं और वित्तीय मदद का लाभ मिलता रहेगा, जिससे राज्य में समग्र विकास की संभावना मजबूत होगी। यह जीत न सिर्फ एनडीए के लिए बड़ी है, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश

## बिहार में भाजपा बनी नंबर वन पार्टी, राजद और कांग्रेस का निराशाजनक प्रदर्शन

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की प्रचंड आंधी देखने को मिली। बीजेपी जदयू के नेतृत्व वाले गठबंधन राज्य की 243 सीटों में से 202 सीटों पर जीत दर्ज की। इस चुनाव में बीजेपी 89 सीटों के साथ राज्य का सबसे बड़ा दल बनकर उभरी जबकि उसकी सहयोगी जदयू 85 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर रही। एनडीए गठबंधन में शामिल लोजपा (राम विलास) 19, जीतन राम मांझी की पार्टी हम पांच और उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक मोर्चा चार सीटें जीतने में सफल रहे। बात अगर महागठबंधन की करें तो राजद को सिर्फ 25 मिलीं। पिछली चुनाव की तुलना में उसे बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। राजद की सहयोगी कांग्रेस सिर्फ छह सीटों पर सिमट गई। इसके अलावा महागठबंधन में शामिल भाकपा माले दो, आईआईपी एक और सीपीआई (एम) एक सीट ही जीत पाई। राज्य में एआईएमआईएम पांच और बहुजन समाज पार्टी एक सीट जीतने में सफल रही। वहीं प्रशांत किशोर और मुकेश सहनी की पार्टी के हाथ खाली चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर, जो लगातार तीन साल से बिहार में अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करने की कोशिश कर रहे थे, उनकी पार्टी का कोई उम्मीदवार जीत दर्ज नहीं कर सका। वहीं, महागठबंधन का हिस्सा बने सन ऑफ मल्लाह मुकेश सहनी की पार्टी वीआईपी के भी इस चुनाव में हाथ खाली रह गए। बिहार विधानसभा की 243 सीटों के लिए 6 और 11 नवंबर को 2 चरणों में मतदान कराये गए थे। पहले चरण में 65.1 और दूसरे चरण में करीब 69 प्रतिशत मतदान हुआ था। इस तरह बिहार में रिकॉर्ड 66.91 प्रतिशत मतदान हुआ। मतदान के मामले में महिला मतदाताओं ने पुरुषों को काफी पीछे छोड़ दिया। इस बार हुए कुल मतदान में पुरुषों की भागीदारी 62.8 फीसदी रही, तो महिलाओं की भागीदारी 71.6 प्रतिशत रही। 14 नवंबर को सभी 243 सीटों पर एक साथ मतगणना करायी गई।

कुमार दोनों के लिए एक मजबूत राजनीतिक पुष्टि भी है। उनका जनादेश साफ कह रहा है, बिहार स्थिरता और गठबंधन पर भरोसा करता है, और विपक्ष को इस बार करारी शिकस्त मिली है।

**पीएम मोदी का विकास का सहयोग और सीएम नीतीश का रोडमैप बिहार की जनता को भाया**

विधानसभा चुनाव के दौरान नीतीश सरकार का विकास वाला रोडमैप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का बिहार के विकास के लिए केंद्र के सहयोग का वादा, बिहार की जनता के मन को भा गया। नीतीश कुमार के लगभग 20 साल के कार्यकाल के बाद भी जिस तरह का प्रचंड बहुमत बिहार की जनता ने एनडीए को दिया है। इसकी कल्पना तो विपक्ष के दल कर भी नहीं रहे थे। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में बंपर वोटिंग के बाद एनडीए की प्रचंड जीत हुई। महागठबंधन की पार्टियां तो आश्वस्त थीं कि बिहार में हुआ ताबड़तोड़ मतदान सरकार को हटाने के पक्ष में किया गया है, लेकिन जब ईवीएम से वोटों के नंबर निकलने शुरू हुए तो विपक्ष यकीन नहीं कर पा रहा था कि बिहार की जनता का भरोसा नीतीश कुमार और पीएम मोदी पर आज भी जारी है। वैसे राजनीति के जानकार और राजनीतिक विश्लेषक के साथ चुनाव को करीब से समझने और देखने वाले लोग हमेशा से मानते हैं कि जब इतने बड़े स्तर पर वोटिंग होती है, तो यह हमेशा व्यवस्था के खिलाफ होती है। पांच या दस प्रतिशत के बीच वोटर चुनाव में मतदान करने के लिए ज्यादा आगे आते हैं तो कहा जाता है कि हो सकता है कि सत्ता पक्ष के साथ हों। लेकिन, जब भी 10 प्रतिशत और उसके ऊपर वोटर बूथ तक पहुंचते हैं। उसके बाद कयास लगाया जाता है कि वहां जनता जरूर बदलाव के मूड में है। शायद मतगणना से पहले तक यही कॉन्फिडेंस महागठबंधन के नेताओं के चेहरे पर भी झलक रहा था। इस बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए को मिली महाजीत के दो सबसे बड़े विजेता हैं। सबसे पहले नंबर पर नीतीश कुमार और दूसरे नंबर पर चिराग पासवान। चिराग की पार्टी ने इस चुनाव में गजब की बैटिंग की है और उनका स्ट्राइक रेट सबको चौंका गया है। जबकि इतने लंबे समय तक सत्ता में रहने के बाद भी बिहार की जनता का भरोसा नीतीश पर कायम है। यह बड़ी बात है। इस चुनाव में जदयू ही वह पार्टी है, जिसे सबसे ज्यादा फायदा हुआ है। जेडीयू को दोगुना फायदा साफ नजर आ रहा है। दरअसल अपनी सेहत पर लगातार उठते सवाल और नेतृत्व पर महागठबंधन की तरफ से कसे जा रहे तंज के बावजूद भी नीतीश कुमार जनता की पसंद बने रहने में कामयाब नजर आ रहे हैं। 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल

बिहारी वाजपेयी के कहने पर बिहार के मुख्यमंत्री पद को संभालने वाले नीतीश कुमार बाद के वर्षों में गठबंधन तो बदलते रहे, लेकिन सत्ता उनके इर्द-गिर्द ही चलती रही। वह नौ बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले चुके हैं। ऐसे में सत्ता विरोधी लहर का सामना करने के बाद भी नीतीश कुमार के नेतृत्व पर बिहार की जनता का भरोसा साफ दिखाता है कि चाहे नीतीश की सेहत को लेकर विपक्ष कितने भी सवाल खड़े कर ले। 'नीतीश कुमार' को जनता प्रदेश की सेहत के लिए अच्छा मान रही है। दूसरा कारण इस बार महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से ज्यादा होना भी है। 2010 से लगातार चार बिहार विधानसभा चुनावों में महिलाएं पुरुषों से अधिक मतदान कर रही हैं। पहले जहां महिलाएं 50 प्रतिशत तक ही वोट डालती थीं, वहीं अब 70 प्रतिशत से ऊपर का आंकड़ा पार कर चुकी हैं। इसे आप सिर्फ बिहार का सामाजिक परिवर्तन नहीं मानें, बल्कि यह महिला सशक्तीकरण की दिशा में भी बड़ी उपलब्धि है। यह वोट बिहार में महिलाओं के लिए नीतीश सरकार की सोच की वजह से है। एक बार देखिए छात्रवृत्ति, आरक्षण, छात्राओं के लिए साइकिल और पोशाक योजना, स्वयं सहायता समूहों के जरिए रोजगार, उद्योग के लिए सहायता राशि और हाल ही में महिलाओं को सीधे बैंक खाते में 10 हजार रुपए की आर्थिक सहायता राशि। बिहार में सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 33 फीसदी और पंचायती राज में 50 फीसदी आरक्षण का प्रावधान, जिसकी वजह से प्रदेश में पुरुषों की तुलना में महिलाएं पहले से अधिक आत्मनिर्भर और जागरूक हुई हैं। ऐसे में साफ नजर आया कि इस बार महिलाओं ने किसी के कहने पर नहीं बल्कि अपने निर्णय से नीतीश के पक्ष में वोट किया। नीतीश कुमार के नाम पर जिस तरह एनडीए के हर घटक दल के नेता सहमत दिखे, वहीं दूसरी तरफ विपक्ष इस मामले में बिखरा हुआ नजर आया। पहले चरण के लिए नामांकन की आखिरी तारीख तक महागठबंधन में सीटों का बंटवारा नहीं हो पाया था। कई सीटों पर गठबंधन में शामिल दो-दो दलों के उम्मीदवार आमने-सामने थे। इस देरी का फायदा एनडीए को मिला। महागठबंधन ने एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस भी की तो उसमें तेजस्वी को मुख्यमंत्री पद का और वीआईपी के मुकेश सहनी को उपमुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित किया गया।

बिहार की जनता के द्वारा किए गए मतदान से साफ हो गया कि पीएम मोदी और नीतीश कुमार की विकास पुरुष वाली छवि वहां की जनता को पसंद है। एनडीए इस बात को स्थापित करने में कामयाब रहा कि डबल इंजन वाली सरकार ही बिहार में विकास को गति दे सकती है। एनडीए के दलों द्वारा इन्हीं दो चेहरों को आगे रखकर चुनाव लड़ा गया। वहीं बिहार की जनता अब जंगलराज की दोबारा वापसी नहीं चाहती और सुशासन चाहती है, को स्थापित कर पाने में भी एनडीए के नेता कामयाब रहे। वहीं एनडीए से बाहर होने के चलते 2020 में जेडीयू और बीजेपी को नुकसान पहुंचाने वाले चिराग पासवान के सपोर्ट को इस बार इस बड़ी जीत में कहीं से भी कम करके नहीं आंका जा सकता है। एनडीए को मिला उनका सपोर्ट बिहार में जनता दल यूनाइटेड और बीजेपी दोनों ही पार्टियों के लिए संजीवनी का काम कर गया। इसके साथ ही बिहार के ग्रामीण और गरीबों के लिए जमीनी लाभार्थी योजनाओं ने जितना काम एनडीए के पक्ष में किया, उतना किसी और राज्य में नहीं दिखा। नीतीश का सात निश्चय और बीजेपी की केंद्रीय योजनाएं लाभार्थियों के लिए जातिगत रूप से संतुलित रहीं। ईबीसी और दलित वोटरों को इसका सबसे अधिक फायदा पहुंचा। वहीं नीतीश कुमार की महिलाओं के कल्याण पर टिकी योजनाओं ने प्रदेश में एनडीए को मजबूत आधार दिया।

# कांग्रेस हाईकमान ने गोदियाल को दी फिर कमान

**उत्तराखंड कांग्रेस में लंबे समय से चली आ रही अंतर्कलह, नेतृत्व की असंगति और संगठनात्मक जड़ता के बीच हाईकमान ने एक बार फिर बड़ा दांव खेलते हुए गणेश गोदियाल पर भरोसा जताया है। विधानसभा चुनाव 2027 के मिशन की दिशा में यह कदम सिर्फ नेतृत्व परिवर्तन नहीं, बल्कि पार्टी की रणनीतिक सोच का हिस्सा माना जा रहा है, जिसके तहत कांग्रेस राज्य में एक स्थिर चेहरा, अनुभवयुक्त नेतृत्व और बेहतर सामंजस्य की तलाश में है। गोदियाल को दोबारा जिम्मेदारी सौंपना यह संकेत है कि हाईकमान अब प्रयोगों की बजाय ऐसे चेहरे चाहता है जो संगठन को एकजुट रख सके और चुनावी वर्ष से पहले पार्टी की बिखरी ऊर्जा को केंद्रित कर सके। हालांकि, इस बदलाव ने कुछ वरिष्ठ नेताओं में असंतोष की परत भी खड़ी कर दी है, जो पहले से ही टिकट वितरण, क्षेत्रीय नेतृत्व और निर्णय प्रक्रिया को लेकर नाराज बताए जा रहे थे। कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व मानता है कि 2027 की लड़ाई के लिए एक स्पष्ट कमान, जमीनी पकड़ और भरोसेमंद नेतृत्व की जरूरत है और इन तीनों कसौटियों पर गोदियाल सबसे मजबूत विकल्प साबित होते हैं। राज्य में बढ़ते राजनीतिक मुकाबले और भाजपा के सशक्त संगठन के बीच कांग्रेस यह संदेश भी देना चाहती है कि अब वह स्थायी दिशा, सामंजस्य और टीमवर्क के साथ चुनावी मैदान में उतरने के लिए तैयार है।**

कांग्रेस ने उत्तराखंड में एक बार फिर बड़ा राजनीतिक दांव खेलते हुए गणेश गोदियाल पर भरोसा जताया है। हाईकमान ने उन्हें दोबारा प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपकर संकेत दे दिया है कि पार्टी 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले संगठन को स्थिर नेतृत्व देना चाहती है। इस बदलाव के साथ कांग्रेस ने राज्य में व्यापक फेरबदल करते हुए प्रीतम सिंह को प्रचार समिति और हरक सिंह रावत को चुनाव प्रबंधन समिति की कमान सौंपी है, जबकि 27 नए जिला अध्यक्षों की नियुक्ति कर निचले स्तर तक ऊर्जा भरने की कोशिश की गई है। हाईकमान के इस निर्णय को पार्टी के भीतर नए सामंजस्य की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में उत्तराखंड कांग्रेस लगातार गुटबाजी और नेतृत्व संघर्ष से जूझती रही है। हालांकि फेरबदल के साथ असंतोष की आवाजें भी उठी हैं। कुछ वरिष्ठ नेता बदलाव को लेकर नाराज बताए जा रहे हैं, विशेषकर उन नेताओं के समर्थक जिन्हें निर्णय प्रक्रिया में किनारे रखा गया। इसके बावजूद पार्टी नेतृत्व का मानना है कि चुनावी वर्ष से पहले एक अनुभवी, स्वीकार्य और नियंत्रित नेतृत्व की जरूरत है और इन मानकों पर गोदियाल सबसे उपयुक्त चेहरा हैं।

दूसरी ओर, गणेश गोदियाल ने जिम्मेदारी संभालते ही संगठन को नीचे से मजबूत करने, कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने और जनता के मुद्दों को प्राथमिकता देने की बात कही है। उनका कहना है कि कांग्रेस राज्य में सामाजिक न्याय और जन केन्द्रित शासन को अपना मुख्य एजेंडा बनाते हुए भाजपा सरकार की कमियों को सामने लाएगी।

हाईकमान इस फेरबदल को 2027 की रणनीति का शुरुआती संकेत मान रहे हैं। समय रहते टीम बदलकर पार्टी न केवल फर्स्ट मूवर एडवांटेज हासिल करना चाहती है, बल्कि बूथ स्तर तक अपने ढांचे को फिर सक्रिय करने की तैयारी में है। हालांकि पार्टी के सामने गुटबाजी पर काबू पाना, नेताओं में तालमेल बनाना और जनता में दोबारा विश्वास लौटाना बड़ी चुनौती बनी हुई है। कांग्रेस ने यह परिवर्तन ऐसे वक्त में किया है जब भाजपा राज्य में 2027 के लिए जोर-शोर से अपनी चुनावी जमीन मजबूत कर रही है। उत्तराखंड कांग्रेस में गणेश गोदियाल की दोबारा ताजपोशी अचानक नहीं थी। पिछले दो महीनों से हाईकमान राज्य इकाई की गतिविधियों पर लगातार नजर बनाए हुए था। कई जिलों से संगठन की कमजोर पकड़, कार्यकर्ताओं की निष्क्रियता और स्थानीय नेतृत्व के बीच बढ़ते मतभेद की रिपोर्ट दिल्ली तक पहुंच रही थी। इन्हीं वजहों से नेतृत्व परिवर्तन की तैयारी चुपचाप शुरू हुई। बताया जाता है कि दिल्ली में हुई एक रणनीतिक बैठक में दो नाम सबसे ऊपर थे। गणेश गोदियाल और एक अन्य वरिष्ठ नेता। आखिरकार गोदियाल के अनुभव, उनकी स्वीकार्यता और शांत स्वभाव को देखते हुए हाईकमान ने उन्हें प्राथमिकता दी। खास तौर पर यह माना गया कि वे असंतोष झेलने और अलग-अलग गुटों को साथ लाने में सक्षम हैं। प्रदेश के कई जिलों में भाजपा लगातार कार्यक्रम, सम्मेलन और संगठन विस्तार कर रही है। ऐसे में कांग्रेस चाहती है कि वह समय से पहले अपने ढांचे को व्यवस्थित कर ले। यही कारण है कि नई टीम में अनुभव, क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व और जातीय संतुलन पर खास ध्यान दिया गया है। हरक सिंह रावत और प्रीतम सिंह जैसे दिग्गजों को अहम जिम्मेदारियां देना इसी रणनीति का हिस्सा है। संगठन के भीतर हालांकि स्थिति पूरी तरह सहज नहीं है। कुछ जिलों में नए जिला अध्यक्षों की नियुक्ति पर स्थानीय नेताओं ने आपत्ति जताई है। कई नेता यह दावा कर रहे हैं कि हाईकमान ने बिना जमीनी सर्वे के फैसले लिए हैं। यही वजह है कि आने वाले हफ्तों में गोदियाल के सामने सबसे बड़ी चुनौती असंतुष्ट नेताओं को साधने और पार्टी को एकजुट बनाए रखने की होगी। दूसरी तरफ, आलाकमान ने साफ कर दिया

है कि अब राज्य इकाई में लगातार प्रयोग नहीं होंगे। इस बार की टीम को लंबी अवधि के लिए नियुक्त किया गया है ताकि 2027 के चुनाव तक संगठन मजबूत खड़ा हो सके। गोदियाल का अब तक का रुख भी यही इशारा देता है कि वह विवादों से दूर, प्रदेश के सभी हिस्सों में संगठन की पुनर्संरचना की योजनाओं पर काम शुरू कर चुके हैं और जल्द ही बूथ स्तर पर नई समितियों के गठन का अभियान चलाएंगे। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि यह पूरा बदलाव संगठन सृजन अभियान का हिस्सा है। हमने हर जिले में कार्यकर्ताओं से बात की, उनकी राय जानी और फिर सोच-समझकर ये नियुक्तियां कीं। हमारा लक्ष्य है कि कांग्रेस को बूथ स्तर तक मजबूत बनाया जाए। कांग्रेस 2027 के विधानसभा चुनावों की तैयारी में जुट गई है। गणेश गोदियाल, प्रीतम सिंह और हरक सिंह रावत जैसे अनुभवी नेताओं को नेतृत्व में लाकर पार्टी ने साफ संकेत दिया है कि अब संगठन चुनाव मोड में आ चुका है। नई जिला इकाइयों से कांग्रेस को जमीनी स्तर पर नई ऊर्जा मिलने की उम्मीद है।

**साल 2002 में गणेश गोदियाल पहली बार बने थे विधायक**

गणेश गोदियाल 2002 में थलीसैंण विधानसभा सीट से चुनाव जीतकर पहली बार विधायक बने थे। गणेश गोटियाल ने थाली सेंड विधानसभा चुनाव में भाजपा के बड़े नेता रमेश पोखरियाल निशंक को हराया था। इसके बाद 2007 में विधानसभा चुनाव में गणेश गोदियाल को हार का सामना करना पड़ा। साल 2017 में परिसीमन के बाद श्रीनगर विधानसभा सीट बन गई। साल 2012 में गणेश गोदियाल ने श्रीनगर से चुनाव लड़ा और इस बार उन्होंने धन सिंह रावत को चुनाव हराया लेकिन साल 2017 में बेहद ही नजदीकी मुकाबले में धन सिंह रावत से गणेश गोदियल चुनाव हार गए। 2021 में गणेश गोदियाल को कांग्रेस ने प्रदेश अध्यक्ष बना दिया पर 2022 के विधानसभा चुनाव में गणेश गोदियाल फिर धन सिंह रावत से चुनाव हार गए। इसके बाद गणेश गोदियाल को अध्यक्ष पद से हटाकर करन महारा को प्रदेश संगठन की जिम्मेदारी दी गई। 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस हाईकमान ने गोदियाल को कांग्रेस का टिकट दिया। लोकसभा चुनाव में गढ़वाल लोकसभा से गणेश गोदियाल चुनाव लड़े लेकिन उन्हें भाजपा के अनिल बलूनी ने चुनाव हारा दिया। गणेश गोदियाल को इससे पहले जब कमान सौंप गई थी तो वह चुनाव का समय था अब गणेश गोदियाल को 1 साल पहले प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है ऐसे में गणेश गोदियाल के पास सबसे महत्वपूर्ण संगठन को गुटबाजी से दूर करना है। संगठन को मजबूत करना है और कार्यकर्ताओं को दोबारा सक्रिय कर 2017 से सत्ता से दूर कांग्रेस को वापस सत्ता में लाने की जिम्मेदारी है। इसके अलावा कांग्रेस संगठन ने अपने 27 सांगठनिक जिलों के अध्यक्षों की भी नियुक्ति कर दी है। अब कांग्रेस के नए प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल को दिग्गजों को साथ लेकर उत्तराखंड की राजनीति में कांग्रेस को आगे बढ़ाना है।

# रजत जयंती पर पीएम मोदी ने उत्तराखंड को दी नई उड़ान

**उत्तराखंड राज्य स्थापना की रजत जयंती पर देहरादून का ऐतिहासिक एफआरआई परिसर उस क्षण का साक्षी बना, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देवभूमि को विकास की नई उड़ान देने का संकल्प दोहराया। मंच से पीएम मोदी ने न सिर्फ राज्य को हजारों करोड़ की परियोजनाओं की सौगात दी, बल्कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व पर पूरा भरोसा जताते हुए कहा कि "धामी सरकार के काम अब जमीन पर स्पष्ट दिख रहे हैं।" 25 साल के इस सफर को 'संघर्ष, विश्वास और परिवर्तन' की कथा बताते हुए प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड की जनता की ऊर्जा, युवाओं की प्रतिभा और पहाड़ों की असीम संभावना को देश के भविष्य की ताकत करार दिया। रजत जयंती के इस भव्य समारोह में जैसे पूरा उत्तराखंड अपने स्वर्णिम कल के सपने को साकार होते देखने के लिए एकजुट हो गया हो। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट**

उत्तराखंड रजत जयंती के ऐतिहासिक अवसर पर 9 नवंबर को देहरादून का एफआरआई परिसर उत्तराखंड के स्वर्णिम भविष्य का साक्षी बना, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्य को नई उड़ान देने के लिए 8,260 करोड़ से अधिक की सौगातों का पिटारा खोलते हुए कहा कि धामी सरकार के काम अब जमीन पर साफ दिख रहे हैं और उत्तराखंड आज नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है। इस अवसर पर पीएम मोदी ने उत्तराखंड की गौरवशाली यात्रा के प्रतीक के रूप में एक स्मारक डाक टिकट भी जारी

किया। अगस्त 2014 के बाद 30वीं बार उत्तराखंड पहुंचे मोदी से पहले मंच को संबोधित करते हुए सीएम पुष्कर सिंह धामी ने उनकी जमकर तारीफ की। प्रधानमंत्री ने सोंग और जमरानी जैसे बहुप्रतीक्षित डैम प्रोजेक्ट्स को हरी झंडी दी, देहरादून के लिए बड़े जल आपूर्ति प्रोजेक्ट, बिजली व सड़क अवसंरचना, खेल सुविधाओं, महिला स्पोर्ट्स कॉलेज और आधुनिक डेयरी प्लांट की नींव रखी, साथ ही पीएम फसल बीमा की किस्त के रूप में 28 हजार से अधिक किसानों को 62 करोड़ रुपये सीधे ट्रांसफर किए। उन्होंने राज्य को वैश्विक आध्यात्मिक केंद्र बनाने का संकल्प दोहराते हुए कहा कि उत्तराखंड की क्षमता असीम है, आने वाला दशक देवभूमि का होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 नवंबर को देहरादून में उत्तराखंड की रजत जयंती समारोह में अपने संबोधन के दौरान पारंपरिक पहाड़ी टोपी पहनकर गढ़वाली-कुमाऊनी बोलियों में कई महत्वपूर्ण बिंदु रखे, जिससे स्थानीय लोगों में विशेष उत्साह देखा गया। उन्होंने भाषण में कहा कि देवभूमि की असली पहचान उसकी आध्यात्मिक ताकत में है और अगर उत्तराखंड ठान ले, तो यह दुनिया की आध्यात्मिक राजधानी" बन सकता है। वहीं सीएम पुष्कर सिंह धामी ने आंदोलनकारियों और शहीदों के परिजनों की पेंशन बढ़ाने की बड़ी घोषणा की, जिससे समारोह और अधिक भावुक व ऐतिहासिक बन गया। पूरा कार्यक्रम इस संदेश के साथ संपन्न हुआ कि 25 साल की संघर्षगाथा अब उत्तराखंड के विकास के 'स्वर्ण युग' की ओर निर्णायक कदम बन चुकी है। सीएम धामी ने पीएम मोदी का भव्य स्वागत करते हुए उन्हें ओंकारेश्वर मंदिर का स्मृति चिन्ह व पारंपरिक शॉल भेंट किया, जो उनकी गर्मजोशी और सम्मान की स्पष्ट तस्वीर है। इसके अलावा, धामी ने मोदी के नेतृत्व की जमकर तारीफ की और कहा है कि "आत्मनिर्भर उत्तराखंड" का उनका सपना मोदी की प्रेरणा से और अधिक मजबूत हुआ है। उन्होंने यह भी भरोसा जताया कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर उत्तराखंड को उसके 25-साल के संघर्ष से निकलकर 2047 तक एक समृद्ध और आत्मनिर्भर राज्य बनाने की दिशा में आगे बढ़ा रही है। उत्तराखंड की रजत जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देहरादून आगमन ने जहां पूरे राज्य में उत्सव जैसा माहौल बनाया, वहीं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की प्रतिक्रियाओं ने एक अलग ही राजनीतिक संदेश दिया। मंच पर धामी बार-बार गदगद होते दिखाई दिए लेकिन यह सिर्फ भावनात्मक क्षण नहीं था। यह संकेत था कि आने वाले महीनों में राज्य सरकार की नीतियों की धुरी बदलने वाली है। पीएम मोदी ने अपने संबोधन में उत्तराखंड के लिए नौ महत्वपूर्ण "अनुरोध" रखे स्थानीय बोलियों के संरक्षण, पहाड़ी संस्कृति की सुरक्षा, पर्यावरण संतुलन, ऑर्गेनिक उत्पादों को बढ़ावा, युवाओं की स्किल-डेवलपमेंट, पर्यटन विस्तार, स्वास्थ्य-इन्फ्रास्ट्रक्चर, जल संरक्षण और पहाड़ी कृषि की मजबूती जैसी बातें। धामी ने मंच से ही घोषणा की कि इन नौ बिंदुओं को वह "सरकार की नई कार्य-सूची" के रूप में अपनाएंगे। यह स्पष्ट संकेत है कि धामी सरकार अब लोक संस्कृति, प्रकृति संरक्षण और होमस्टे-टूरिज्म मॉडल पर ज्यादा फोकस करेगी। वहीं धामी ने 25 वर्षों की राज्य यात्रा में शहीद आंदोलनकारियों को याद करते हुए कहा कि "आज उत्तराखंड जिस ऊंचाई पर है, वह उन वीरों की कुर्बानी की देन है"। यह बयान न सिर्फ राजनीतिक भावनाओं को छूता है बल्कि भाजपा के लिए पहाड़ी वोट-कंसोलिडेशन का बड़ा आधार भी तैयार करता है। पीएम मोदी की प्रेरणा और धामी की प्रतिबद्धता के इस संगम ने रजत जयंती जैसे प्रतीकात्मक आयोजन को आने वाले वर्षों की पॉलिसी-ड्राइविंग ताकत में बदल दिया है, जिससे साफ है कि उत्तराखंड अब 'सांस्कृतिक-विकास मॉडल' की दिशा में तेजी से आगे बढ़ेगा।

## उत्तराखंड आने वाले समय में हिमालयी विकास मॉडल का केंद्र बनेगा

पीएम मोदी ने कहा कि उत्तराखंड आने वाले समय में "हिमालयी विकास मॉडल" का केंद्र बनेगा और यहां की युवा ऊर्जा, प्रदेश को 2027 तक एक नई पहचान दिलाएगी। प्रधानमंत्री मोदी के संबोधन के दौरान कार्यक्रम में भीड़ का उत्साह देखने लायक था। अनुमान के मुताबिक, करीब एक लाख से अधिक लोगों ने प्रधानमंत्री मोदी का भाषण सीधे सुना, जबकि हजारों लोग सभा स्थल के बाहर सड़कों पर मौजूद रहे। इसे उत्तराखंड के इतिहास की सबसे बड़ी जनसभा बताया जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के इस ऐतिहासिक संबोधन ने रजत जयंती समारोह को एक नए आयाम पर पहुंचा दिया, जहां अतीत के संघर्षों की यादें और भविष्य की आशाओं का संगम दिखाई दिया। प्रधानमंत्री के इस संबोधन के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं में जोश और कांग्रेस खेमे में बेचैनी साफ देखी जा रही है। उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देहरादून दौरे को उत्तराखंड कांग्रेस ने पूरी तरह निराशाजनक बताया है। वहीं कांग्रेस नेताओं ने राज्य सरकार और केंद्र पर एक साथ निशाना साधा। करन माहरा ने कहा कि सरकार केवल मंचों से बड़े-बड़े दावे कर रही है, जबकि जमीन पर हालात बिल्कुल अलग हैं। युवा बेरोजगार हैं, महंगाई चरम पर है और पलायन रोकने का कोई ठोस उपाय नहीं दिखता। वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रीतम सिंह ने आरोप लगाया कि पीएम का दौरा पूरी तरह राजनीतिक था" और राज्य की असल चुनौतियों स्वास्थ्य, पहाड़ी सड़कों की बदहाल स्थिति और खेती संकट पर कोई ठोस घोषणा नहीं की गई। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि धामी सरकार हर दौरे को उत्सव बना देती है, लेकिन जनता राहत चाहती है, विज्ञापन नहीं। कांग्रेस ने यह भी कहा कि रजत जयंती समारोह में सरकार को आंदोलनकारियों की लंबित मांगों पर ठोस रोडमैप देना चाहिए था, केवल मंच से भावनात्मक भाषण नहीं। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. प्रतिमा सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री ने राज्य हित में कोई भी नई घोषणा नहीं की, जिससे राज्य की जनता खुद को ठगा हुआ महसूस कर रही है।

# विज्ञान-प्रौद्योगिकी की रोशनी में चमका देहरादून, "हम विज्ञान से ही विश्व में शीर्ष पर"

**देहरादून एक बार फिर विज्ञान और नवाचार का केंद्र बना, जहां बुधवार को छठे देहरादून अंतरराष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव 2025 का रंगारंग और भव्य शुभारंभ हुआ। यूकास्ट झाझरा परिसर में आयोजित तीन दिवसीय महोत्सव ने न सिर्फ उत्तराखंड बल्कि पूरे देश के वैज्ञानिक समुदाय, रिसर्चर्स, तकनीकी विशेषज्ञों और हजारों छात्रों को एक ही मंच पर जोड़ दिया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रदेश के वन, तकनीकी शिक्षा एवं संसदीय कार्य मंत्री सुबोध उनियाल द्वारा फीता काटकर किया गया, जिन्होंने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि भारत आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शक्ति के दम पर दुनिया के शीर्ष देशों में खड़ा है। विशेषकर स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में। उन्होंने ज्ञान के विस्तार और विज्ञान की पहुंच को समाज की प्रगति का मूल आधार बताते हुए कहा कि ''ज्ञान बांटने से हमेशा बढ़ता है'' और यही भावना ऐसे आयोजनों को जन-जन तक पहुंचाती है। उद्घाटन समारोह में राज्य और देश के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों का सम्मान किया गया, वहीं महोत्सव के पहले ही दिन युवा वैज्ञानिकों, स्टार्टअप्स और स्कूली छात्रों में नवाचार का जोश देखने लायक रहा, जिसने महोत्सव को एक विज्ञान-उत्सव में बदल दिया। तीन दिवसीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव में 12 हजार से अधिक छात्र, युवा, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, अध्यापकों एवं विज्ञान प्रेमियों ने भाग लिया।**

छठे देहरादून अंतरराष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव 2025 का बुधवार को रंगारंग शुभारंभ हुआ। यूकास्ट झाझरा में शुरू हुए तीन दिवसीय (12 नवंबर से 14 तक) विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के इस महोत्सव का उद्घाटन प्रदेश के वन, तकनीकी शिक्षा एवं संसदीय कार्य मंत्री सुबोध उनियाल ने फीता काटकर किया। इस अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए तकनीकी शिक्षा मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि हमारा देश विश्व में आज जिस स्थान पर पहुंचा है उसके पीछे सबसे बड़ा योगदान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास का है। उन्होंने कहा कि आज हम स्पेस टेक्नोलॉजी में दुनिया के शीर्ष देशों में शामिल है। उन्होंने जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान एक ऐसी वस्तु है जो बांटने से हमेशा बढ़ती है। उन्होंने कहा कि ज्ञान किसी भी उम्र में किसी भी समय किसी से भी प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रचार प्रसार के लिए इस तरह के आयोजनों की प्रशंसा की। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल ने उत्तराखंड के विकास में अमूल्य योगदान देने वाली वैज्ञानिक संस्थाओं को सम्मानित किया जिनमें प्रमुख रूप से इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पेट्रोलियम के निदेशक डॉक्टर हरिंदर सिंह बिष्ट, ओएनजीसी लिमिटेड के हेड कॉर्पोरेट नीरज कुमार शर्मा, उत्तराखंड जल विद्युत निगम के प्रबंध निदेशक डॉक्टर संदीप सिंघल, सौगंध पौधा केंद्र के निदेशक डॉक्टर नृपेंद्र चौहान, नाबार्ड उत्तराखंड के मुख्य महा प्रबंधक पंकज यादव, सॉफ्टवेयर

टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया के निदेशक डॉक्टर संजय गुप्ता, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय निदेशक डॉक्टर गौरव शर्मा, जेएसडब्ल्यू एनर्जी के निदेशक ज्ञान भद्र कुमार को स्मृति चिन्ह, अवॉर्ड सर्टिफिकेट और उत्तराखंड में पाई जाने वाली बिच्छू घास के रेशे से बना अंग वस्त्र भेंट किया।

समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए पदमश्री पदम भूषण डॉक्टर अनिल प्रकाश जोशी ने कहा कि सन 1800 से पूर्व अमेरिका का पूरे विश्व की जीडीपी में केवल 5% योगदान था लेकिन वैज्ञानिक क्रांति के बाद उसका योगदान तेजी से बढ़ा और आज वह दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। यह बढ़ोतरी केवल विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास का परिणाम है। उन्होंने कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास अत्यंत आवश्यक है और देहरादून अंतरराष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव जैसे आयोजन समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और चेतना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यूकास्ट के महानिदेशक डॉक्टर दुर्गेश पंत ने अपने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यूकास्ट विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से जन-जन को आजीविका और तकनीक से जोड़ने के कार्य में संलग्न है। कार्यक्रम में सम्मानित अतिथियों के अलावा उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय के निदेशक डॉक्टर अमित अग्रवाल, कुलसचिव डॉक्टर राजेश उपाध्याय, डीआइटी विश्वविद्यालय के डॉक्टर नवीन सिंघल तथा तकनीकी शिक्षा के पूर्व निदेशक डॉक्टर आर. पी. गुप्ता सहित बड़ी संख्या में वैज्ञानिक, रिसर्चर्स और छात्र उपस्थित थे। मंचासीन सभी अतिथियों का स्वागत देहरादून अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी महोत्सव के आयोजन सचिव डॉक्टर कुमार राज अस्थाना ने एक पौधा भेंटकर किया। इससे पूर्व, महोत्सव के पहले दिन साइंस पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 39 छात्र-छात्राओं को विभिन्न श्रेणियों में पदमश्री पदम भूषण डॉक्टर अनिल प्रकाश जोशी द्वारा आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए गए। यंग साइंटिस्ट एवं स्टार्टअप कॉन्क्लेव में 20 से अधिक स्कूलों

# जियो थर्मल पॉलिसी बनाने वाला उत्तराखंड देश का पहला राज्यः *डॉ आर मीनाक्षी सुंदरम*

छठे देहरादून अंतरराष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव के दूसरे दिन आयोजित ग्रीन एनर्जी कॉन्क्लेव में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रदेश के ऊर्जा एवं नियोजन सचिव डॉक्टर आर मीनाक्षी सुंदरम ने कहा कि उत्तराखंड देश का पहला राज्य है जिसने जियोथर्मल एनर्जी पॉलिसी को बनाया। उन्होंने बताया कि इसी पॉलिसी के आधार पर भारत सरकार ने भी जियो थर्मल पॉलिसी पर आगे काम शुरू किया। डॉ सुंदरम ने बताया कि 2047 तक विकसित राष्ट्र का सपना पूरा करने के लिए सबसे प्राथमिक आवश्यकता ऊर्जा की होगी और हमें ऊर्जा की वृद्धि एक्स्पोनेंशियल रूप से करनी होगी, इसी को ध्यान में रखते हुए ग्रीन ऊर्जा के ऐसे गैर परंपरागत स्रोत जिसमें कार्बन फुटप्रिंट ना हो इन पर पूरे देश में काम चल रहा है। उन्होंने बताया कि सोलर एनर्जी ग्रीन एनर्जी का एक बहुत बड़ा स्रोत है लेकिन सोलर एनर्जी का उपयोग हम रात में नहीं कर पा रहे हैं। जैसे ही हम सोलर एनर्जी को बैटरी बेस एनर्जी के अंदर परिवर्तित करते हैं तो उसकी लागत मूल्य में बहुत अधिक वृद्धि हो जाती है। अभी इस पर रिसर्च चल रहा है कि किस तरह से सोलर एनर्जी को स्टोर करके रात में उसका उपयोग किया जाए, जिससे उसके लागत मूल्य में वृद्धि न हो। ओएनजीसी के मुख्य महाप्रबंधक ई संजय मुखर्जी ने बताया कि ओएनजीसी ने उत्तराखंड राज्य में 62 ऐसे जगह को चिन्हित किया है जहां पर जियोथर्मल का स्रोत है, उन स्रोत के माध्यम से जियोथर्मल एनर्जी को दोहन किया जा सकता है जिस पर काम चल रहा है। उरेडा ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से पूरे प्रदेश में सोलर एनर्जी के रूप के विकास में किए गए कार्यों के बारे में बताया। छठे देहरादून विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव के दूसरे दिन कुल 9 से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य रूप से स्पेस साइंस क्विज, रूरल एंटरप्रेन्योरशिप एवं स्टार्टअप कांक्लेव, मैजिक आर्फ मैथ्स, मॉडल रॉकेट्री वर्कशॉप, स्टेम वर्कशॉप, बायो टेक्नोलॉजी कांक्लेव, साइबर सिक्योरिटी कांक्लेव और कास्टा कॉन्फ्रेंस शामिल थी। साइबर सिक्योरिटी कॉन्फ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में एसटीएफ के एसएसपी नवनीत भुल्लर और नेशनल ई गवर्नेंस प्रोग्राम के उत्तराखंड हेड श्री रवि शंकर सिंह और माया देवी विश्वविद्यालय की वाइस प्रेसिडेंट तृप्ति जुयाल ने प्रतिभा किया। बायोटेक्नोलॉजी कॉन्क्लेव में भारतीय चिकित्सा परिषद के अध्यक्ष डॉ. जे एन नौटियाल, डॉ राजीव कुरेले, डॉक्टर पीयूष गोयल ने उपस्थित छात्रों को बायोटेक्नोलॉजी क्षेत्र और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हो रहे महत्वपूर्ण कार्यों के बारे में बताया और बताया कि बायोटेक्नोलॉजी के क्षेत्र में पूरे विश्व में भारत आठवें स्थान पर है। रूरल एंटरप्रेन्योरशिप एवं स्टार्टअप कॉन्क्लेव में मुख्य अतिथि के रूप में भाग प्रतिभा करते हुए नियोजन विभाग के निदेशक डॉ मनोज पंत एवं इंडस्ट्री विभाग के संयुक्त निदेशक डॉक्टर दीपक मुरारी ने उपस्थित जन समुदाय के साथ संवाद किया और कुछ ऐसे प्रतिभागी जिन्होंने हिमालय की परंपरागत प्रौद्योगिकी और उत्पादों के माध्यम से स्टार्टअप खड़े किए उनके सक्सेस स्टोरी को सुना और किस तरह से ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध चीजों को लेकर नए-नए स्टार्टअप्स प्रारंभ किया जा सकते हैं उन पर चर्चा की। साइंस क्विज, मैजिक ऑफ मैथ आदि वर्कशॉप में 1000 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। छठे देहरादून अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव के दूसरे दिन लगभग 4000 से भी अधिक छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभा किया और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी का लाभ उठाया 3 दिन तक चलने वाली इस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित प्रदर्शनी में 70 से अधिक स्टॉल लगे हैं जिनमें एसडीआरएफ, उत्तराखंड पुलिस टेलीकॉम, एसटीएफ, सुगंध पौधा केंद्र, उत्तराखंड ऑर्गेनिक बोर्ड और भांग और बिच्छू घास के रेशे से बने वस्त्रों की अनोखी एग्जीबिशन सबको अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

की टीमों ने भाग लिया और अपने स्टार्टअप आइडियाज प्रस्तुत किए। इनमें से चार टीमों को 10-10 हजार रुपये की धनराशि देकर पुरस्कृत किया गया। एयर मॉडलिंग वर्कशॉप में 200 से अधिक बच्चों ने छोटे लकड़ी के हवाई जहाज बनाने की ऑन-स्पॉट ट्रेनिंग ली और उड़ान भरकर उत्साह अनुभव किया। रोबोटिक्स वर्कशॉप में 100 से अधिक छात्रों ने रोबोटिक्स की कार्यप्रणाली और छोटे मॉडल बनाकर विज्ञान को करीब से समझा। छात्रों और विज्ञान प्रेमियों ने टेलीस्कोप से सूर्य का अवलोकन किया। इसके अलावा 2000 से अधिक बच्चों ने साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्सजीबिशन और आंचलिक विज्ञान केंद्र का भ्रमण किया।

**''टीचर आफॅ द ईयर'' सम्मान के साथ अंतरराष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव का भव्य समापन**

देहरादून अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव का समापन राज्य के प्रतिष्ठित 'टीचर ऑफ द ईयर' अवार्ड के साथ संपन्न हुआ। समापन समारोह में कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर दीवान सिंह रावत, एम्स ऋषिकेश की निदेशक डॉ मीनू सिंह एवं क्वांटम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ विवेक कुमार को ष्वाइस चांसलर ऑफ द ईयर' तथा उत्तराखंड बायोटेक्नोलॉजी काउंसिल के निदेशक डॉ संजय कुमार को 'आउटस्टैंडिंग कंट्रीब्यूशन अवार्ड' प्रदान किया गया। 04 संस्थानों डीआइटी विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी, क्वांटम विश्वविद्यालय और माया देवी विश्वविद्यालय को अलग अलग श्रेणियों में हिमालयन एजुकेशन एक्सीलेंस अवार्ड प्रदान किया गया।

इस वर्ष 12 अध्यापकों को 'एक्सीलेंस इन रिसर्च' अवार्ड से सम्मानित किया गया जबकि चार को 'प्रिंसिपल ऑफ द ईयर' अवार्ड से सम्मानित किया गया। जबकि 28 अध्यापकों को 'टीचर ऑफ द ईयर' अवार्ड से सम्मानित किया गया। देहरादून अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए पूर्व प्रमुख वन संरक्षक एवं हेड ऑफ फॉरेस्ट श्री जयराज ने कहा कि समापन सत्र में जब अध्यापकों को सम्मान देने की बात हो रही है तो अध्यापकों का दायित्व भी बढ़ जाता है उन्होंने अध्यापकों को से कहा कि वह केवल पढ़ाने के लिए ना पढ़ाये बल्कि कुछ अलग तरीके से पढ़ाई और छात्रों में छिपी प्रतिभा को ढूंढ कर आगे लाने का प्रयास करें। अपने अध्यक्षीय भाषण में उत्तराखंड उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष डॉ देवेंद्र भसीन ने कहा कि सभी अध्यापकों को नई शिक्षा नीति पर विचार करने की और उसकी पूरी तरह से समझ कर धरातल पर उतरने की बहुत ही जरूरत है। देहरादून अंतरराष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महोत्सव के आयोजन सचिव डॉक्टर कुंवर राज अस्थाना ने बताया कि तीन दिन तक चले इस फेस्टिवल में 25 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें ग्रीन एनर्जी कांक्लेव, बायोटेक्नोलॉजी कांक्लेव, मेडिकल टेक्नोलॉजी कांक्लेव, रूरल एंटरप्रेन्योरशिप एवं स्टार्टअप कांक्लेव, बौद्धिक संपदा अधिकार कांक्लेव, यंग साइंटिस्ट एवं स्टार्टअप कांक्लेव, मीट द साइंटिस्ट, ड्रोन टेक्नोलॉजी वर्कशॉप, रोबोटिक वर्कशॉप, मॉडल रॉकेटरी वर्कशॉप, स्टेम वर्कशॉप, साइंस पोस्टर कंपटीशन, साइंस क्विज आदि कार्यक्रमों के अलावा एक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की एक अनोखी प्रदर्शनी का भी आवेदन किया गया था जिसमें आईआईपी, एसडीआरएफ, नेहरू इंस्टिट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग, पुलिस टेलीकॉम, एसटीएफ, सेंटर फॉर अरोमैटिक प्लांट्स, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, बायोटेक्नोलॉजी आदि के अलावा प्रौद्योगिकी आधारित कई स्टार्टअप्स तथा कई इंजीनियरिंग कॉलेज और पॉलिटेक्निक के छात्रों द्व ारा बनाए गए मॉडल का प्रदर्शनी शामिल थी। इसके अलावा प्रदर्शनी स्थल पर लगी टेलीस्कोप तथा इलेक्ट्रिक व्हीकल आकर्षण का केंद्र थे। साइंस पोस्टर, साइंस क्विज एवं मैथ क्विज में कुल 108 छात्रों को ऑन द स्पॉट आकर्षक पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। यंग साइंटिस्ट एवं स्टार्टअप कॉन्क्लेव में चार विजेता टीमों को 10000-10000 रुपए का चेक प्रदान किया गया। 100 से अधिक छात्रों को एयरोमॉडलिंग वर्कशॉप में निशुल्क किट प्रदान की गई। स्टेम वर्कशॉप में 100 से अधिक बच्चों किट भी प्रदान की गई। 40 बच्चों ने रॉकेट बनाने की हैंड्स ऑन ट्रेनिंग ली। छात्रों द्वारा बनाए गए रॉकेट्स को यूकॉस्ट के महानिदेशक डॉक्टर दुर्गेश पंत ने अपने हाथों से लॉन्च किया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस अनोखे महोत्सव में छात्रों को नई-नई तकनीकियों के बारे में जानने का मौका मिला और वैज्ञानिकों के साथ संवाद करने का मौका भी मिला साथ ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में बहुत सी प्रदर्शनियां ऐसी थी जो सामान्य रूप से किसी के लिए भी उपलब्ध नहीं थी। बच्चों को प्रौद्योगिकी के बारे में जानकर बहुत ही आनंद महसूस हुआ। कार्यक्रम का स्वागत भाषण यूकॉस्ट के संयुक्त निदेशक डॉक्टर डीपी उनियाल ने दिया। कार्यक्रम के समन्वयक एवं टीचर ऑफ द ईयर स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्य सचिव उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय गोपेश्वर कैंपस के निदेशक डॉक्टर अमित अग्रवाल ने टीचर ऑफ द ईयर के नॉमिनेशन प्रक्रिया और स्क्रीनिंग प्रक्रिया के बारे में अवगत कराया। कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा ए.एस. उनियाल, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ओपीएस नेगी, एम्स ऋषिकेश की निदेशक मीनू सिंह, कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति दीवान सिंह रावत, डीएवी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य अजय कुमार सक्सेना, तकनीकी शिक्षा विभाग के पूर्व निदेशक आर पी गुप्ता, क्वांटम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर विवेक कुमार सहित बड़ी संख्या में वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्ता, अध्यापक, छात्र एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में प्रतिभा करने वाले विभागों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

# किशोरों को सर्वाइकल कैंसर व सड़क दुर्घटनाओं से बचाने की एक सार्थक पहल!

डॉ श्रीगोपाल नारसन
एडवोकेट

180 देशों की मुश्किलों जगहों में वंचित बच्चों तक पहुंच बनाने और काम करने को समर्पित यूनिसेफ ने किशोरों को सर्वाइकल कैंसर व सड़क दुर्घटनाओं से बचाने हेतु जागृति हेतु नई पहल शुरू की है। किशोर स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियों पर मीडिया की भूमिका को सशक्त बनाने के उद्देश्य यूनिसेफ इंडिया द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय 'ट्रेनर्स ऑफ ट्रेनर्स वर्कशॉप' हाल ही में नई दिल्ली में संपन्न हुई है।
वर्कशॉप के उद्घाटन सत्र में यूनिसेफ इंडिया की कम्युनिकेशन प्रमुख जाफरिन चौधरी ने कहा, 'युवा उन स्वास्थ्य मुद्दों पर सटीक जानकारी पाने के हकदार हैं, जो उन्हें और समाज को प्रभावित करते हैं। यह तभी संभव है जब वैज्ञानिक और चिकित्सीय जानकारी को मीडिया के जरिए सटीक और जिम्मेदारी से लोगों तक पहुंचाया जाए। गलत जानकारी से लड़ने का सबसे अच्छा तरीका यही है। हमें सीखना, विश्लेषण करना और समझना होगा कि कैसे तकनीकी जानकारी को प्रस्तुत किया जाए ताकि लोग उसे समझें और उस पर भरोसा करें।
उनका मानना था कि 'सर्वाइकल कैंसर, सड़क सुरक्षा और ऐसे कई अन्य मुद्दों पर जागरूकता को पत्रकारों में शक्रिटिकल अप्रेजल स्किल्स' यानी तथ्यों की गहराई से जांचने की क्षमता के माध्यम से और बेहतर तरीके से समझाया व प्रसारित किया जा सकता है। वरिष्ठ संपादकों के मार्गदर्शन में इस दिशा में यूनिसेफ पिछले एक दशक से प्रयासरत है।
यूनिसेफ इंडिया कंट्री ऑफिस के स्वास्थ्य प्रमुख (कार्यकारी) डॉ. विवेक वीरेंद्र सिंह ने कहा, 'सर्वाइकल कैंसर ऐसा एकमात्र कैंसर है जिसे वैक्सीन से रोका जा सकता है। जागरूकता इस बीमारी से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका है। मीडिया समाज में व्याप्त झिझक और गलत धारणाओं को तोड़ने में अहम भूमिका निभा सकता है। अगर मीडिया इस विषय को वर्जित मुद्दे के रूप में नहीं, बल्कि एक साझा सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता के रूप में प्रस्तुत करे तो महिलाएं समय पर मदद ले सकेंगी।
हर सटीक और संवेदनशील खबर हमें उस भविष्य के और करीब ले जाती है, जहां कोई भी महिला एक रोकी जा सकने वाली बीमारी से अपनी जान न गंवाए।"
डॉ. विवेक वीरेंद्र सिंह ने कहा, 'हर दुर्घटना रोकी जा सकती है और मीडिया सड़क सुरक्षा को एक साझा सामाजिक और शासन के मुद्दे के रूप में फिर से परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जिसके लिए त्रासदी के बाद की सहानुभूति के बजाय डेटा-आधारित जवाबदेही की आवश्यकता है। अगर मीडिया, नीति निर्माताओं और नागरिक डेटा प्लेटफॉर्म के बीच मजबूत तालमेल बना सके, तो सड़क सुरक्षा से जुड़ी खबरें रोकथाम, कानून के पालन और समानता पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकेंगी' स्वास्थ्य विषयों में संपादकों की रणनीतिक भागीदारी के लिए कार्यशाला कार्यशाला का विषय 'उभरती किशोर स्वास्थ्य चुनौतियां- सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षाश आयोजित की गई। उल्लेखनीय है कि देश में साल 2022 में देश में सर्वाइकल कैंसर के लगभग 79,103 नए मामले दर्ज किए गए और 34,805 महिलाओं की इस बीमारी से मृत्यु हुई- जबकि यह एक ऐसी बीमारी है जिसे रोका जा सकता है। वहीं दूसरी ओर सड़क सुरक्षा पर एक विशेष सत्र में बताया गया कि भारत में हर साल 150,000 से अधिक लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं, जिसमें बच्चे और युवा सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। वर्कशॉप में किशोर स्वास्थ्य से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों, खासतौर पर सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए मीडिया से अपनी भूमिका को और मजबूत करने का आह्वान किया गया।
वर्कशॉप में वरिष्ठ स्वास्थ्य संपादकों के साथ शक्रिटिकल अप्रेजल स्किल्स' यानी तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग और रणनीतिक तरीके से स्टोरी पेश करने की तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसका मकसद था किशोरों के स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर अधिक प्रभावी और जिम्मेदार पत्रकारिता को बढ़ावा दिया जा सके।
इस वर्कशॉप में पूरे भारत से वरिष्ठ संपादक, स्वास्थ्य पत्रकार, मीडिया एजुकेटर और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ एक साथ आए। इसका उद्देश्य सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षा पर तथ्यों पर आधारित, निरंतर और मानव-केंद्रित रिपोर्टिंग को मजबूत करना

था। निस्संदेह, ये भारत की दो सबसे गंभीर, लेकिन कम रिपोर्ट की जाने वाली सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियां हैं। प्रतिभागियों ने न्यूजरूम के भीतर की व्यवस्थागत बाधाओं की जांच की, गलत सूचनाओं का मुकाबला करने में मीडिया की भूमिका पर चर्चा की और साथ ही सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े आंकड़ों को लोगों की असली जिंदगी की कहानियों से जोड़ने के लिए रणनीतियां भी तैयार की। यूनीसेफ की कम्युनिकेशन्स आफिसर सोनिया सरकार ने बताया कि एम्स के प्रिवेंटिव ऑन्कोलॉजी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. पल्लवी शुक्ला; निमहंस के डब्ल्यूएचओ सहयोग केंद्र के प्रमुख डॉ. गौतम एम. सुकुमार और मध्य प्रदेश में यूनिसेफ के चीफ ऑफ फील्ड ऑफिसर अनिल गुलाटी ने भी वर्कशॉप में भाग लेने वाले संपादकों को संबोधित किया।

उल्लेखनीय है कि प्रतिभागियों ने छह संपादकीय समूहों में काम किया ताकि किशोरियों के स्वास्थ्य, खासकर सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षा से जुड़े मुद्दों की बेहतर कवरेज के लिए न्यूजरूम की रणनीतियां तैयार की जा सकें। संपादकों ने यह भी पता लगाया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स डेटा विश्लेषण, शोध अनुवाद और तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग में कैसे मदद कर सकते हैं। साथ ही वैज्ञानिक शोध को क्षेत्रीय और भाषाई मीडिया के लिए सुलभ बनाने के तरीकों पर भी चर्चा की गई।

यह वर्कशॉप 'क्रिटिकल अप्रेजल स्किल्स' फ्रेमवर्क के अंतर्गत आयोजित की गई थी, जो यूनिसेफ समर्थित पहल है। इसे 2014 में इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन के साथ साझेदारी में शुरू किया गया था।

उल्लेखनीय है कि प्रशिक्षित सलाहकार अब मास्टर ट्रेनर बनकर महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान और कर्नाटक में पत्रकारों के लिए राज्य स्तरीय वर्कशॉप आयोजित करेंगे। ये गलत सूचनाओं को दूर करने, रिपोर्टिंग की गुणवत्ता में सुधार करने और सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षा पर जिम्मेदार, डेटा पर आधारित जानकारी को बढ़ावा देने के लिए भाषाई मीडिया की क्षमताओं को मजबूत करेंगे। ऐसी उम्मीद की जा रही है। (लेखक ज्वलंत मुद्दों के वरिष्ठ पत्रकार है)

# मधुमेह को दवा से ही नहीं, संतुलित जीवन से भी परास्त करें

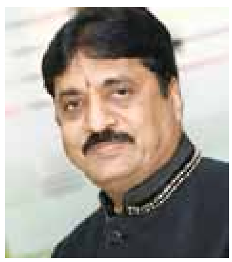

ललित गर्ग

दुनिया में बढ़ती मधुमेह की भयावहता इसलिये चिन्ताजनक है कि हर तीसरा शहरी वयस्क डायबिटीज से जूझ रहा है। यह बीमारी अनेक अन्य बीमारियों को भी बढ़ाने का बड़ा कारण है। मधुमेह के बढ़ने के कारणों में मुख्यत: खानपान में अनियमितता और शारीरिक निष्क्रियता सबसे बड़ी वजह है। विश्व मधुमेह दिवस हर वर्ष 14 नवम्बर को मनाया जाता है। यह दिन प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रेडरिक बैंटिंग के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है, जिन्होंने 1922 में इंसुलिन की खोज कर दुनिया को मधुमेह से राहत देने का मार्ग दिखाया। अंतरराष्ट्रीय मधुमेह संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1991 में इसकी शुरुआत की थी। इस वर्ष का थीम है मधुमेह और समग्र कल्याण। यह थीम इस तथ्य पर केंद्रित है कि मधुमेह का उपचार केवल दवाइयों से नहीं बल्कि संतुलित और स्वस्थ जीवनशैली से संभव है। मधुमेह आज एक वैश्विक स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है। बदलती जीवनशैली, अनियमित भोजन, तनाव, मोटापा और शारीरिक निष्क्रियता इसके प्रमुख कारण हैं। यह बीमारी चुपचाप शरीर को भीतर से खोखला करती है और हृदय, गुर्दे, आंखों और नसों पर गहरा असर डालती है। मधुमेह को नियंत्रित करना केवल चिकित्सा का विषय नहीं, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला है। इसके लिए सबसे पहले जीवन में संतुलन एवं सात्विक जीवनशैली की आवश्यकता होती है यानी संतुलित आहार, संतुलित नींद, संतुलित विचार और संतुलित आचरण। जीवन का यह संतुलन ही स्वास्थ्य का मूल मंत्र है। जब हम अपने जीवन को एक अनुशासन में ढालते हैं, तो रोग अपने आप दूर भागते हैं। मधुमेह आज केवल रोग नहीं, बल्कि समग्र स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है।

मधुमेह का प्रबंधन केवल दवा और आहार तक ही सीमित नहीं है; इसमें मानसिक स्वास्थ्य सहायता, तनाव प्रबंधन, जीवनशैली शिक्षा और सामुदायिक जुड़ाव भी शामिल है। इसका लक्ष्य रोगी को मधुमेह की चुनौतियों का सामना करते हुए एक स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने के लिए सशक्त बनाना है। समग्र देखभाल, शीघ्र हस्तक्षेप और सहायक वातावरण को बढ़ावा देकर, मधुमेह रोग के बजाय व्यक्ति के उपचार के महत्व पर जोर देना मधुमेह दिवस का उद्देश्य है। यह दिवस मधुमेह से पीड़ित लोगों के

शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और जीवन की गुणवत्ता के बीच महत्वपूर्ण संबंध पर प्रकाश डालता है। इस वर्ष का अभियान डॉक्टरों, नीति निर्माताओं और समुदायों से आग्रह करता है कि वे केवल रक्त शर्करा के स्तर से आगे बढ़कर रोगी के संपूर्ण कल्याण पर ध्यान केंद्रित करें।

डायबिटीज जैसी घातक एवं असाध्य बीमारी को नियंत्रित करने के लिये अफवाहों से बचना जरूरी है, इसके लिये बड़ा दिल नहीं, समझदार दिल होना चाहिए। मर्यादित आहार ही, इस बीमारी को रोकने का एक सस्ता और असरदार उपाय हो सकता है। डायबिटीज (मधुमेह) की समस्या भारत समेत पूरे विश्व में तेजी से बढ़ रही है। इसके चलते हमें कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। डायबिटीज पहले अमूमन अधेड़ उम्र के लोगों में होती थी, अब यह बच्चों एवं युवकों को भी शिकंजे में ले रही है। भारत में करीब 10 करोड़ लोगों को डायबिटीज है। वहीं विश्व में 44 करोड़ लोग इससे पीड़ित है। भारत में डायबिटीज की प्रचलित दर 11.5 प्रतिशत है, जबकि प्री डायबिटीज के मामलों की दर 15.3 प्रतिशत तक पहुँच गई है , यानी देश का हर 10 में से एक व्यक्ति इस बीमारी से प्रभावित है। एक अनुमान के अनुसार 85 करोड़ लोग दुनिया भर में डायबिटीज के मरीज 2050 तक हो जाएंगे।

मधुमेह से बचने और इसे नियंत्रित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है नियमित शारीरिक गतिविधि। सुबह-सुबह की सैर, हल्का व्यायाम, दौड़ना या साइकिल चलाना न केवल शरीर को सक्रिय रखता है बल्कि रक्त में ग्लूकोज के स्तर को भी संतुलित करता है। इसके साथ ही योग और ध्यान का अभ्यास मधुमेह के नियंत्रण में अत्यंत प्रभावी माना गया है। योग केवल शरीर को लचीला नहीं बनाता बल्कि मन को शांत करता है और तनाव को कम करता है। प्राणायाम, अनुलोम-विलोम, कपालभाति, भ्रामरी जैसे योग अभ्यास इंसुलिन के स्राव को संतुलित करते हैं और मन को स्थिर बनाते हैं। ध्यान से मन की अस्थिरता और चंचलता कम होती है, जिससे तनाव नियंत्रित रहता है। तनाव और अवसाद मधुमेह के छिपे हुए शत्रु हैं। जब मन तनावग्रस्त होता है तो शरीर में कोर्टिसोल जैसे हार्मोन बढ़ जाते हैं, जो रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ाते हैं। इसलिए मन को शांत और प्रसन्न रखना उतना ही आवश्यक है जितना शरीर को स्वस्थ रखना।

मधुमेह के प्रबंधन में भोजन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। खानपान में शुद्धता और संयम दोनों ही जरूरी हैं। आज के समय में फास्ट फूड, प्रोसेस्ड फूड, तले-भुने और मीठे खाद्य पदार्थों की भरमार ने लोगों के स्वास्थ्य को बिगाड़ दिया है। भोजन में सादा, ताजा और पौष्टिक आहार अपनाना ही सबसे बड़ी दवा है। साबुत अनाज, दालें, हरी सब्जियां, सलाद, फल, अंकुरित अनाज और पर्याप्त मात्रा में पानी-ये सब मिलकर शरीर को ऊर्जा तो देते ही हैं, मधुमेह को भी नियंत्रित रखते हैं। अधिक तला-भुना, मिठाई, नमक, और चाय-कॉफी जैसी चीजें सीमित मात्रा में लेनी चाहिए। समय पर भोजन करना और ओवरईटिंग से बचना भी आवश्यक है। खाना न केवल पेट भरने का माध्यम है बल्कि यह हमारे जीवन की गुणवत्ता को निर्धारित करता है। 'जैसा अन्न वैसा मन'-यह कहावत मधुमेह के संदर्भ में बिल्कुल सत्य है।

संतुलित जीवनशैली का अर्थ केवल आहार-विहार का नियंत्रण नहीं बल्कि सकारात्मक सोच और अनुशासित दिनचर्या भी है। जो व्यक्ति अपने दिन का एक निश्चित समय योग, ध्यान और आत्मचिंतन में लगाता है, वह न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहता है। तनाव, क्रोध, ईर्ष्या, असंतोष जैसी भावनाएं मन में रासायनिक असंतुलन पैदा करती हैं जो धीरे-धीरे शरीर में रोगों का कारण बनती हैं। अति-विचार से बचना भी जरूरी है। मधुमेह से बचने के लिए इन मानसिक विषों को दूर रखना उतना ही आवश्यक है जितना दवा लेना। अपने मन को हल्का और हृदय को प्रसन्न रखने की कला सीखनी होगी। धार्मिक प्रवृत्तियाँ, सत्संग, संगीत, साहित्य, प्रकृति के निकट समय बिताना, परिवार के साथ हंसी-मजाक करना-ये सब जीवन को संतुलन और आनंद से भर देते हैं।

मधुमेह के रोगियों को नियमित रूप से अपने शुगर स्तर की जांच करनी चाहिए और डॉक्टर की सलाह का पालन करना चाहिए। दवा के साथ-साथ आत्म-निगरानी और जीवनशैली में निरंतर सुधार ही स्थायी स्वास्थ्य का आधार है। छोटी-छोटी बातों में सावधानी बड़ी बीमारियों से रक्षा करती है। शरीर को सक्रिय रखना, मन को शांत रखना और भोजन को संयमित रखना-ये तीन सूत्र मधुमेह नियंत्रण के त्रिदेव हैं। इस वर्ष के विश्व मधुमेह दिवस का संदेश यही है कि केवल दवा नहीं, बल्कि जीवन की दिशा बदलनी होगी। मधुमेह को नियंत्रण में रखने का सबसे कारगर उपाय है-"संतुलित जीवन।" जब मन, शरीर और आत्मा का समन्वय होता है तो स्वास्थ्य अपने आप खिल उठता है। इस 14 नवम्बर को हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी जीवनशैली को अनुशासित, सकारात्मक और स्वास्थ्य-केंद्रित बनाएंगे। नियमित योग और ध्यान करेंगे, भोजन में संयम रखेंगे, तनाव को दूर करेंगे और अपने शरीर को प्रेम से समझेंगे। क्योंकि स्वस्थ शरीर ही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। मधुमेह जैसी बीमारी हमें भयभीत करने के लिए नहीं आई, बल्कि हमें सजग, अनुशासित और संतुलित जीवन जीने का संदेश देने के लिए आई है। अगर हम यह संदेश समझ जाएं तो मधुमेह भी जीवन के संतुलन की शिक्षक बन जाती है।

# संस्कृति, परंपरा और आस्था की रक्षा करने वालों को सम्मानित करने का दिन है 'जनजाति गौरव दिवस'

(निखिलेश महेश्वरी -विभूति फीचर्स)

भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय आंदोलन एक दीर्घ और प्रेरणादायी यात्रा रही है, जिसमें हर आयु वर्ग के युवा, महिला, बुजुर्ग और बच्चों ने सक्रिय भूमिका निभाई। जम्मू-कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक, हर जाति और समुदाय ने "राष्ट्र प्रथम" की भावना को आत्मसात करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। इस राष्ट्रीय आंदोलन में भारत की जनजातियाँ भी कभी पीछे नहीं रहीं। उन्होंने सदैव अपने साहस, पराक्रम और अदम्य बलिदान से राष्ट्र की मर्यादा और स्वाभिमान की रक्षा की। प्राचीन युग से लेकर मुगल और अंग्रेज काल तक, जनजातीय समाज ने अपने स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष किया। हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप के साथ पुंजा भील के नेतृत्व में बारह हजार भील सैनिकों ने वीरता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सदा-सदा के लिए अमरता हो गए। गोंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती ने मुगलों से युद्ध करते हुए अपने राज्य और आत्मसम्मान के लिए बलिदान दिया। उनका जीवन भारतीय नारी शक्ति के लिए साहस और त्याग का प्रतीक बन गया। इसी प्रकार भोपाल की रानी कमलापति ने अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए हँसते-हँसते प्राण त्याग दिए। उनका जीवन आत्मसम्मान और पराक्रम की अमर कहानी है। ब्रिटिश शासनकाल में भी जनजातीय समाज ने स्वतंत्रता की ज्योति को जलाए रखा। मणिपुर की रानी माँ गाईडिल्यु ने मात्र 13 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँक दिया था। उन्होंने अपने क्षेत्र में हो रहे धर्मांतरण का विरोध और नागा समाज में स्वाभिमान की चेतना को जगाया था। उनका जीवन देशभक्ति, त्याग और साहस का अद्वितीय उदाहरण है। मध्य भारत की भूमि जनजातीय वीरों की वीरता से अंकित है। 1857 की क्रांति के समय जब संपूर्ण देश स्वतंत्रता की ज्वाला में दहक रहा था, तब मध्यप्रदेश के जनजातीय नायक भी इस संग्राम में अग्रसर हुए। बड़वानी के भीमा नायक ने तात्या टोपे को नर्मदा पार कराने में सहयोग दिया और अंबापानी के युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध वीरता

के साथ लड़े। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़कर अंडमान की जेल भेज दिया। इसी काल में खाज्या नायक ने सात सौ भीलों की एक संगठित सेना बनाकर अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोला। रघुनाथ सिंह भिलाला और सीताराम कँवर ने भी निमाड़ क्षेत्र में विद्रोह कर क्रांति की अलख जगाई। निमाड़ के लोगों में चर्चित "मामा टंटया भील" का नाम इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उन्होंने अंग्रेजों के अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और गरीबों की सहायता की। अंग्रेज उन्हें "भारतीय रॉबिन हुड" कहते थे। 1889 में फाँसी के फंदे पर चढ़ते हुए उन्होंने भारत माता की सेवा में अपने प्राण न्योछावर कर दिए। सन् 1857 में जब पूरे देश में स्वतंत्रता की ज्वाला भड़की, तब जबलपुर के गोंड राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध जन-जागरण का अभियान प्रारंभ किया। राष्ट्रप्रेम से प्रेरित इन दोनों वीरों ने अपने राज्य में क्रांति की अलख जगाई। अंग्रेजों ने षडयंत्र रचने के आरोप में उन्हें 14 सितंबर 1858 को गिरफ्तार कर लिया ओर चार दिन तक कठोर यातनाएँ देने के बाद 18 सितंबर 1858 को जबलपुर कोतवाली के सामने तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया। वीर योद्धा पिता-पुत्र देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सदा-सदा के लिए अमर हो गए। पूर्वी भारत के वीर तिलका माँझी ने 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध छेड़ा। अंततः पकड़े जाने पर जनता में दहशत पैदा करने के लिए अंग्रेजों ने उन्हें चार घोड़ों से बाँधकर घसीटते हुए भागलपुर में ले जाकर फाँसी दे दी। उनका बलिदान स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभिक अध्याय में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। झारखंड के जनजातीय क्षेत्र में अंग्रेज शासनकाल के दौरान ईसाई मिशनरियों द्वारा बड़े पैमाने पर धर्मांतरण किया जा रहा था। इस अन्यायपूर्ण कार्य का बिरसा मुंडा ने दृढ़ता से विरोध किया। उनके नेतृत्व में जनजातीय समाज एकजुट होकर अपनी संस्कृति, परंपरा और आस्था की रक्षा के लिए खड़ा हुआ। अपने साहस, सेवा और नेतृत्व के कारण वे जन-जन के प्रिय बने और "धरती आबा" अर्थात् "धरती पिता" या "बिरसा भगवान" के रूप में पूजे जाने लगे। ऐसे स्वाधीनता सेनानी और धर्मरक्षक योद्धा का जीवन आज भी गरीब, वंचित और जनजातीय समाज के लिए प्रेरणा और आदर्श है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे असंख्य ज्ञात-अज्ञात जनजातीय वीरों ने भारत माता की बलिवेदी पर हँसते-हँसते अपने प्राण न्यौछावर किए। किंतु दुर्भाग्यवश आज की युवा पीढ़ी को इन महापुरुषों के बारे में बहुत कम बताया गया है। वर्तमान भारत सरकार ने इन क्रांतिवीरों के योगदान को सम्मानित करने का ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए 10 नवंबर 2021 को केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में 15 नवंबर, बिरसा मुंडा जी के जन्मदिवस को 'जनजाति गौरव दिवस' के रूप में घोषित किया। यह दिवस केवल बिरसा मुंडा जी को ही नहीं, बल्कि उन सभी ज्ञात-अज्ञात जनजातीय बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर है, जिन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। वर्ष 2025, बिरसा मुंडा के जन्म का 150वाँ वर्ष है। आइए, हम उनके जीवन से यह सीखें कि कैसे एक सामान्य व्यक्ति ने अंग्रेजी सत्ता, धर्मांतरण और पूँजीवाद के विरुद्ध खड़े होकर समाज को संगठित किया और अपने शौर्य, पराक्रम, सेवा तथा धर्मनिष्ठा से "बिरसा मुंडा" से "बिरसा भगवान" बन गए। आज हमारा दायित्व है कि हम इन महान राष्ट्रवीरों के आदर्शों को आत्मसात करें, उनके जीवन से प्रेरणा लें और आने वाली पीढ़ियों को उस गौरवशाली इतिहास से परिचित कराएँ। यही उन बलिदानी आत्माओं के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जब भारत की युवा पीढ़ी इन जनजातीय वीरों की गाथाओं से परिचित होगी, तभी "विकसित भारत, समर्थ भारत" का स्वप्न साकार होगा। '(विभूति फीचर्स)'
'(लेखक विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त के प्रांत संगठन मंत्री हैं।)'

# जौलजीबी मेला है सदियों से भारत और नेपाल की सांस्कृतिक, आर्थिक और पारंपरिक मित्रता का प्रतीक

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार, जौलजीबी, पिथौरागढ़ में भारत-नेपाल सीमा पर काली और गोरी नदी के संगम पर आयोजित होने वाले ऐतिहासिक जौलजीबी मेला का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने विभिन्न घोषणाएं की। विकासखण्ड मुनस्या अन्तर्गत ग्राम हूपली में झलूड़ी से पल्याती तक मार्ग निर्माण किया जायेगा। बगीचा से धारचूला कोट ट्रैकिंग मार्ग एवं मेला स्थल का विकास कार्य कराया जायेगा। ग्राम पय्या पौड़ी से नालालेख शिव मंदिर तक ट्रैक रूट निर्माण कराया जायेगा। विकासखण्ड मुनस्या अन्तर्गत कालापानी से दशरथ पर्वत कुण्ड तक सम्पर्क मार्ग का निर्माण कार्य कराया जायेगा। विकासखण्ड मुनस्या के अन्तर्गत ग्राम सुरिंग में आन्तरिक सी.सी. मार्ग का निर्माण किया जायेगा। सिमगड़ नदी भैंसकोट में आर.सी.सी. पुलिया एंव सम्पर्क मार्ग का निर्माण कराया जायेगा एवं धारचूला में सैनिक विश्राम भवन बनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह मेला सदियों से भारत और नेपाल की सांस्कृतिक, आर्थिक और पारंपरिक मित्रता का प्रतीक है। जौलजीबी मेला केवल आयोजन नहीं, भारत-नेपाल की पारंपरिक मित्रता और आर्थिक-सामाजिक एकरूपता का प्रतिबिंब है। मुख्यमंत्री ने कहा वो स्वयं भी बचपन में इस मेले में आते थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत नेपाल की मित्रता और अधिक सुदृढ़ हुई है। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तराखंड की रजत

जयंती के अवसर पर कहा था कि उत्तराखंड की आत्मा उसके मेलों और त्योहारों में बसती है और उन्होंने आहवान किया कि राज्य में एक जिला-एक मेला कार्यक्रम प्रारंभ किया जाए। जिसमें जिले के एक प्रमुख मेले को विशेष सहयोग दिया जाएगा जिससे उस मेले के सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व को बल मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा राज्य सरकार विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से पिथौरागढ़ जनपद सहित इस क्षेत्र के समग्र विकास को सुनिश्चित करने हेतु पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। आज पिथौरगढ़ में साढ़े सात सौ करोड़ रूपए से अधिक की लागत से मेडिकल कॉलेज का निर्माण किया जा रहा है। 34 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से स्पोर्ट्स कॉलेज में आधुनिक मल्टीपर्पज हॉल का निर्माण कार्य भी कराया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा विकासखंड बेनाग में शीघ्र ही लगभग 28 करोड़ रुपये की लागत से एक भव्य स्टेडियम का निर्माण कार्य भी प्रारंभ होने जा रहा है। पिथौरागढ़ मेडिकल कॉलेज में लगभग 21 करोड़ रुपये की लागत से 50-बेड के क्रिटिकल केयर ब्लॉक का भी निर्माण करा रहे हैं। जिले में 25 करोड़ रुपए की लागत से अस्कोट, गंगोलीहाट और धारचूला में नए बस स्टेशनों के निर्माण के साथ ही, पिथौरागढ़ में रोडवेज वर्कशॉप का निर्माण कार्य भी कराया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा क्षेत्र में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 327 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से विभिन्न सड़कों का निर्माण कार्य भी गतिमान है। पिथौरागढ़ में कनेक्टिवी को बढ़ावा देने के लिए नैनी सैनी एयरपोर्ट के विस्ताकरण का कार्य तेज गति से आगे चल रहा है। जिसके लिए 450 करोड़ रुपये स्वीकृत किए जा चुके हैं और भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया भी गतिमान है।

मुख्यमंत्री ने कहा राज्य सरकार, रोजगार एवं स्वरोजगार के माध्यम से युवाओं को आगे बढ़ा रही है। प्रदेश में आज रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। अब प्रदेश में सरका भर्तियां पारदर्शी तके से हो रहीं हैं। जो प्रदेश के युवा प्रतिभा और परिश्रम के आधार पर सरका नौकरियां प्राप्त कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने इससे पहले राष्ट्रीय एकता पद यात्रा में प्रतिभाग किया।

इस अवसर पर विधायक हश धामी, विधायक बिशन सिंह चुफाल, भाजपा जिला अध्यक्ष गिश बिष्ट एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

# जानिए कैसा होगा आपका यह सप्ताह

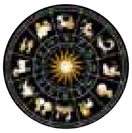
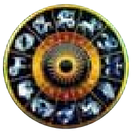
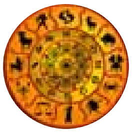

पं. दीपक प्रसाद, शास्त्री (मो. 9557730042)
(ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मिक अनुष्ठान आदि)

**मेष राशि–** इस समय ग्रह गोचर और समय आपके पक्ष में है। शुभ समाचार मिलने से आपके अंदर आत्मविश्वास और नई ऊर्जा का प्रवाह रहेगा। घर के वरिष्ठ सदस्यों की सलाह पर अमल करना आपको एक नया दृष्टिकोण देगा। परिवार के सदस्यों के साथ मनोरंजन में भी समय व्यतीत होगा। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी। प्रभावशाली व्यक्ति की मदद लेना उचित रहेगा।

**वृषभ राशि–** सामाजिक गतिविधियों में आपकी उपस्थिति रहेगी तथा संपर्क दायरा भी बढ़ेगा। युवाओं को अपने करियर संबंधी कोई शुभ समाचार के मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। किसी संबंधी के साथ चल रहा विवाद सुलझ जाएगा और संबंधों में पुनः मधुरता आएगी। नया काम शुरू करने की प्लानिंग कर रहे हैं, तो तुरंत निर्णय लें, बेहतरीन परिस्थितियाँ बनी हुई हैं।

**मिथुन राशि–** पिछले कुछ समय से चल रही किसी समस्या से आज राहत मिलने वाली है। राजनीति की दिशा में रुझान रखने वाले लोगों को उत्तम सफलता मिलेगी। आपकी प्रतिभा और योग्यता का सामाजिक गतिविधियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जगह संबंधी कोई योजना भी कार्य रूप में परिणित होगी। पारिवारिक व्यवसाय में अच्छे लाभ की संभावना है।

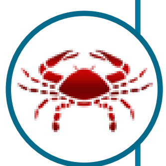

**कर्क राशि–** घर तथा व्यवसाय दोनों जगह उचित सामंजस्य बना रहेगा तथा व्यक्तिगत कार्यों के लिए भी समय निकालने में सफल रहेंगे। बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद व स्नेह से घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहेगी। अनुभवी व्यक्ति के सहयोग से आप कोई निर्णय लेने में सफल रहेंगे। वर्तमान गतिविधियों का शुभ परिण ााम भविष्य में जल्दी ही प्राप्त होगा।

**सिंह राशि–** स्थान परिवर्तन संबंधी कोई योजना बन रही है, तो उसके फलीभूत होने का अनुकूल समय है। संतान के करियर संबंधित भी कोई शुभ समाचार मिलेगा। कोई धार्मिक यात्रा भी हो सकती है। कारोबारी समस्याओं का समाधान होता नजर आएगा, कोई नई किरण दिखाई देगी। प्रभावशाली व्यक्ति का सहयोग व सलाह आपको फिर से कामयाबी की ओर लेकर जाएगी।

**कन्या राशि–** परिश्रम और मेहनत की अधिकता रहेगी, परंतु आपको बेहतरीन परिणाम भी हासिल होंगे। किसी मित्र के साथ उपहारों का आदान प्रदान भी होगा। बच्चों के साथ उनके कार्यों में योगदान देना उनको खुशी देगा और उनका कोई विशेष कार्य भी संपन्न हो सकता है। नकारात्मक प्रवृत्ति के कुछ लोग आपकी आलोचना और निंदा करेंगे, परंतु चिंता न करें आपका अहित नहीं होगा।

**तुला राशि–** दिनभर व्यस्तता बनी रहेगी और पारिवारिक जिम्मेदारियों को आप बखूबी निभाने में सक्षम रहेंगे। बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद व स्नेह परिवार पर बना रहेगा। अविवाहित लोगों के लिए कोई खुशखबरी मिल सकती है। नौकरी में अथवा व्यवसाय में माहौल को अनुकूल बनाए रखने में आप कामयाब जरूर रहेंगे। कोई सरकारी यात्रा भी लाभदायक रहेगी।

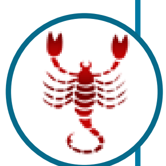

**वृश्चिक राशि–** सकारात्मक और सक्रिय रहने से आप अपनी दिनचर्या को अच्छे से व्यवस्थित कर पाएँगे। राजनीतिक व्यक्तियों के साथ संबंध आपके लिए नई उपलब्धियां प्रदान करेंगे। इन संबंधों का भरपूर फायदा उठाना आना चाहिए। बड़े बुजुर्गों व वरिष्ठ व्यक्तियों का सहयोग आपकी कई समस्याओं का हल निकालने में सहायता करेगा।

**धनु राशि–** घर परिवार के सुख सुविधा संबंधी वस्तुओं की ऑनलाइन खरीदारी में मजेदार समय व्यतीत होगा। पारिवारिक सदस्यों की सुविधाओं का ध्यान रखने में आपका पूरा समर्पण रहेगा। आपके व्यक्तिगत काम भी सुचारु रूप से संपन्न होंगे। व्यावसायिक कार्य प्रणाली में नयापन लाने के लिए परिवर्तन करना आपके लिए लाभदायक ही रहेगा।

**मकर राशि–** आप अपने अंदर जबरदस्त आत्मविश्वास महसूस करेंगे और सोचे हुए कार्य समय पर पूरे हो जाएँगे। परिवार से जुड़ा कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में वरिष्ठ लोगों का भी पूर्ण सहयोग रहेगा। कोई मनोरंजन संबंधी यात्रा का प्लान भी बनेगा। ऑफिशियल यात्रा भी लाभदायक रहेगी। किसी भी विपरीत परिस्थिति में नकारात्मक होना ठीक नहीं है।

**कुंभ राशि–** अपनों का भरपूर सहयोग बना रहेगा। धन लाभ की स्थिति बन रही है। भूमि अथवा वाहन से संबंधित कोई महत्वपूर्ण काम संभव हो सकता है। युवा वर्ग को इंटरव्यू में सफलता मिलने से आत्मविश्वास बढ़ेगा। संपत्ति संबंधित व्यवसाय में आज सकारात्मक परिणाम सामने आएँगे। किसी नजदीकी मित्र की नकारात्मक गतिविधि से आपको आघात लग सकता है।

**मीन राशि–** संपत्ति अथवा वाहन की खरीद फरोख्त संबंधी कोई गतिविधि चल रही है, तो इस समय सफलता मिलने वाली है। मित्रों के साथ मेल मुलाकात होगी। विद्यार्थियों को भी प्रतियोगिता संबंधी परीक्षा में सफलता मिलने के योग बने हुए हैं। अनुभवी व्यक्ति से मुलाकात और उसकी सलाह आपके लिए लाभदायक साबित होगी।

# धीमी रही अजय देवगन-आर माधवन की फिल्म की शुरुआत, पहले दिन कमाए सिर्फ इतने करोड़

अजय देवगन की हिट रोमांटिक कॉमेडी फिल्म 'दे दे प्यार दे' का सीक्वल थिएटर्स में रिलीज हो चुकी है। इस बार उनके साथ आर माधवन भी जुड़ गए हैं। ऐसे में फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर कितनी बड़ी ओपनिंग की? आइए, जानते हैं।

इस हफ्ते थिएटर्स में एक नई फिल्म लगी है, जो फैमिली फ्रेंडली ऑडियंस के लिए अच्छा टाइमपास बन सकती है। बॉलीवुड स्टार अजय देवगन इस साल की अपनी चौथी फिल्म 'दे दे प्यार दे 2' लेकर आए हैं, जो उनकी 2019 में आई हिट फिल्म का सीक्वल है। पिछली बार की तरह, इसमें भी उनके साथ रकुल प्रीत सिंह और जावेद जाफरी हैं। मगर बाकी की पूरी कास्ट बदल चुकी है।

**कैसा रहा 'दे दे प्यार दे 2' का फर्स्ट डे कलेक्शन?**

'दे दे प्यार दे 2' पिछली फिल्म की कहानी को आगे लेकर जाती है। इसमें रकुल प्रीत के किरदार आयशा की फैमिली दिखाई जाती है। फिल्म का ट्रेलर काफी एंटरटेनिंग था। शुक्रवार को जब ये फिल्म रिलीज हुई, तो इसे क्रिटिक्स का सपोर्ट भी मिला। मगर इसे लेकर लोगों के बीच क्रेज काफी कम था।

एडवांस बुकिंग में फिल्म सिर्फ 91 हजार टिकट्स बेच पाई थी। अनुमान लगाया गया कि 'दे दे प्यार दे 2' पहले दिन करीब 10 करोड़ के आसपास की ओपनिंग कर सकती है। लेकिन असलीयत में इसका फर्स्ट डे कलेक्शन काफी कमजोर रहा है। सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, अजय देवगन की फिल्म ने नेट 8.5 करोड़ रुपये की ओपनिंग की है। हालांकि अभी फाइनल नंबर्स आना बाकी है।

'दे दे प्यार दे 2' की ओपनिंग अपनी पहली फिल्म से काफी कम रही है। इसके पहले पार्ट ने फर्स्ट डे 9.11 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। हालांकि 'दे दे प्यार दे 2' की ओपनिंग अजय देवगन की पिछली फिल्म 'सन ऑफ सरदार 2' से बेहतर है। उस फिल्म ने पहले दिन 7.5 करोड़ रुपये कमाए थे।

**क्या 'वर्ड ऑफ माउथ' से मिलेगा फायदा?**

अजय देवगन बॉलीवुड के सबसे बड़े सितारों में गिने जाते हैं। मगर उनकी हाल ही में आई दो फिल्में 'सन ऑफ सरदार 2' और 'दे दे प्यार दे 2' पहले दिन वो कमाल नहीं दिखा पाई, जो उनकी इसी साल आई हिट फिल्म 'रेड 2' ने किया था। उस फिल्म का फर्स्ट डे कलेक्शन 19.25 करोड़ रुपये था।

शुक्रवार के दिन 'दे दे प्यार दे 2' की ऑक्यूपेंसी भी उम्मीद के हिसाब से सिर्फ 14.05% नोट हुई। दिल्ली-एनसीआर, मुंबई और अहमदाबाद में इसके सबसे ज्यादा शोज लगे। हालांकि फिल्म को लगभग हर तरफ से तारीफ ही मिल रही है। ऐसे में अगर वर्ड ऑफ माउथ का जादू चला, तो दूसरे दिन इसके कलेक्शन में अच्छा जंप देखने मिल सकता है।

बात करें 'दे दे प्यार दे 2' की, तो इसमें रकुल प्रीत, अजय देवगन, आर माधवन, जावेद जाफरी के साथ गौतमी कपूर, मिजान जाफरी और इशिता दत्ता जैसे एक्टर्स भी शामिल है। फिल्म को अंशुल शर्मा ने डायरेक्ट, तो लव रंजन और टी-सीरीज ने प्रोडयूस किया है।

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027

Silkyara™

Hamari Pahad Ki Matao Dwara
Pyar se Banaya Gaya

# BADRI COW GHEE

A2 Protein

Ancient Bellona Method

Beneficial for Health

fssai
22623030001586

Available on
**Kumar Sweets**

- *Sahastradhara Road, Near Crossing*
- *Dharampur Near LIC Building*

*Dehradun*